मत भागों उनके पीछे जिन्हें आपकी परवाह ही नहीं।
– अज्ञात

पाकिस्तान एक गहरी मुसीबत में

समस्या तब हुई जब पिछले हफ्ते पाकिस्तानी विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी ने ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन (ओआईसी) से कश्मीर के सवाल पर विदेश मंत्रियों की परिषद की खास बैठक बुलाने की मांग अत्यंत आक्रामक अंदाज में उठाई।

नवीन वर्मा।

कश्मीर को लेकर अपने अति उत्साह के कारण पाकिस्तान एक गहरी मुसीबत में फंस गया है। सऊदी अरब ने उसके साथ हुआ कर्ज और तेल सप्लाई का समझौता रद्द कर दिया है। इस वजह से पाकिस्तान को न केवल 1 अरब डॉलर की तुरंत अदायगी करनी पड़ी बल्कि उधार में तेल की आपूर्ति बंद होने से उसके सामने अचानक एक बड़ा संकट खड़ा हो गया है।

समस्या तब हुई जब पिछले हफ्ते पाकिस्तानी विदेश मंत्री शाह महमूद कुरैशी ने ऑर्गनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन (ओआईसी) से कश्मीर के सवाल पर विदेश मंत्रियों की परिषद की खास बैठक बुलाने की मांग अत्यंत आक्रामक अंदाज में उठाई। उन्होंने कहा कि 'मैं एक बार फिर ओआईसी से सम्मानपूर्वक कह रहा हूं कि हम कश्मीर पर विदेश मंत्रियों की परिषद की बैठक चाहते हैं। अगर आप यह बैठक नहीं बुला सकते तो मजबूर होकर मुझे प्रधानमंत्री इमरान खान से कहना पड़ेगा कि वे उन इस्लामी देशों की बैठक बुलाएं जो इस मुद्दे पर हमारे साथ खड़े होने को तैयार हैं।'

वैसे पाकिस्तान की इस मसले पर हताशा समझी जा सकती है। नाकामियों के लंबे दौर को छोड़ भी दें तो भारत द्वारा अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू–कश्मीर को मिला विशेष दर्जा समाप्त किए जाने के फैसले के बाद पाकिस्तान को लगा था कि वह अब इस मसले को भुना ले जाएगा। उसने पूरी ताकत से हर मंच पर इस मसले को उठाया, लेकिन अभी तक ऐसा कुछ भी नहीं हुआ जिससे लगे कि दुनिया इस मुद्दे पर उसके साथ है। पिछले हफ्ते इस घोषणा को एक साल पूरा होने के मौके पर जब कुरैशी मीडिया को संबोधित कर रहे थे तो संभवतः अब तक की असफलताओं से उपजी हताशा उन पर हावी हो गई। कारण जो भी हो, पर उन्होंने जो कहा, उसका सीधा मतलब यह था कि वे ओआईसी को तोड़ने की बात कर रहे हैं।

दूसरे शब्दों में यह सऊदी अरब को धमकी थी कि अगर उसने कश्मीर के मसले पर पाकिस्तान का कहा न माना तो इस्लामी देशों का नेतृत्व उसके हाथों से छिन जाएगा। तुर्की की अगुआई में हाल के वर्षों में उभर रहे इस्लामी देशों के एक अलग केंद्र ने कुछ महीने पहले कश्मीर पर एक अलग बैठक बुलाकर इस धमकी के हवा–हवाई न होने की पृष्ठभूमि भी बना दी। सो, सऊदी अरब ने देखा कि इस चींटी के पर निकल आए हैं तो उसने तत्काल कार्रवाई कर पाकिस्तान को उसकी औकात बताने में देर नहीं की।

कूटनीति का यह सबक पाकिस्तान के लिए सचमुच काफी महंगा पड़ने वाला है। देखना होगा कि इस मुसीबत से निकलने का वह क्या तरीका ढूंढता है, लेकिन आज इस पड़ोसी मुल्क के स्वतंत्रता दिवस (14 अगस्त) के मौके पर पाकिस्तानी हुक्मरानों को यही सलाह दी जा सकती है कि पड़ोसियों के लिए समस्या खड़ी करने के बजाय वे अपने देश और अपनी अर्थव्यवस्था पर ध्यान दें तो यह न सिर्फ उनके लिए बल्कि सबके लिए बेहतर होगा।

जीवन का विस्फोट

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

यह बस आप का मन है, जो हर चीज को तोड़–मरोड़ कर दिखाता है। जब आप तोड़ना–मरोड़ना बंद कर देते हैं, और हर चीज को वैसी ही देखते हैं जैसी वह है, तो आप जीवन का विस्फोट देखेंगे। यदि आप यहाँ एक करोड़ वर्ष भी रहें, तो भी ये आपको इसे समझने में जबरदस्त रूप से व्यस्त रखेगा। अब तो आधुनिक भौतिक विज्ञानी भी कह रहे हैं कि ये ब्रह्माण्ड हमेशा बढ़ता रहता है। मूल रूप से वे कह रहे हैं कि किसी भी बात के बारे में कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। जो भौतिक विज्ञान पढ़ रहे हैं, उनका यह कहना एक आश्चर्यजनक बात है। लेकिन अब वे समझ रहे हैं कि जिस तरीके से वे सभी चीजों को देख रहे हैं, उसमें कोई गलती है।

संपादकीय

नया समझौता हो

सेंट्रल ग्राउंड वाटर बोर्ड के अनुसार उत्तर प्रदेश के भूमिगत तालाबों की क्षमता टिहरी से लगभग 30 गुना है। उनपर निर्भरता बढ़ाने से मानसून के समय गंगा में बड़ी बाढ़ आएगी और जमा गाद को समुद्र तक ढकेल कर गंगा के चौनल को पुनः साफ कर देगी। इससे आने वाले समय में सालाना बाढ़ का आकार कम हो जाएगा। टिहरी आदि बांधों से हमने बड़ी बाढ़ को रोक लिया है लेकिन नदी का पेटा ऊंचा होने से अब हर छोटी बाढ़ विकराल रूप ले रही है। इन समस्याओं से निपटने के लिए हमें फरक्का बराज के आकार पर पुनर्विचार करना होगा। फरक्का बराज के स्थान पर हमें जालंगी और भैरवी आदि नदियों की ड्रेजिंग करके गंगा के पानी को हुगली में ले जाने पर विचार करना चाहिए जिससे पानी के साथ पर्याप्त मात्रा में गाद भी हुगली को जाए तथा समुद्र की भूख को पूरा करे। दूसरा हमें टिहरी बांध और हरिद्वार तथा नरोरा बराजों को हटाने पर विचार करना चाहिए, जिससे गंगा में बड़ी बाढ़ वापस आए और हर वर्ष की बाढ़ से हमें छुटकारा मिले। सिंचाई के लिए उत्तर प्रदेश और मैदानी क्षेत्रों में वर्षा के जल का संग्रहण कर उसे भूमिगत तालाबों में एकत्रित करना चाहिए। तीसरा, हम बांग्लादेश से समझौता करें कि मानसून के समय गंगा का 80 प्रतिशत पानी एक महीने बांग्लादेश को और एक महीने हुगली को दिया जाए जिससे हुगली गाद को समुद्र तक धकेल सके और गंगासागर का कटान रुके।

बांग्लादेश से समझौता कर गंगा का आधा पानी बांग्लादेश के लिए छोड़ा जाने लगा और आधा पानी हुगली में डालना शुरू कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज हुगली बारहों महीने जीवित है।

गाद का भूखा समुद्र

भरत झुनझुनवाला।।

पिछली सदी में कई मौकों पर हुगली नदी सूख जाती थी। कोलकाता में पीने के पानी की समस्या उत्पन्न हो जाती थी। कोलकाता और हल्दिया बंदरगाहों पर जहाजरानी नहीं हो पाती थी। तब गंगा पर फरक्का बराज बनाया गया। इसके बाद बांग्लादेश से समझौता कर गंगा का आधा पानी बांग्लादेश के लिए छोड़ा जाने लगा और आधा पानी हुगली में डालना शुरू कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज हुगली बारहों महीने जीवित है। लेकिन इसी के परिणामस्वरूप तीन समस्याएं भी उत्पन्न हो गई हैं। पहली समस्या यह कि गंगा अपने साथ जो गाद लाती है वह फरक्का से आगे असंतुलित रूप से बहती है। फरक्का बराज के गेट के नीचे से पानी बांग्लादेश को और ऊपर से हुगली को जाता है। गाद की प्रवृत्ति नीचे बैठने की होती है इसलिए बांग्लादेश को गाद आधिक जाती है।

मेरे आकलन में 80 प्रतिशत गाद बांग्लादेश को और 20 प्रतिशत हुगली को जाती है। गाद के इस असंतुलन से दोनों तरफ समस्या है। बांग्लादेश में गाद ज्यादा जाने के कारण यह पद्मा नदी के पेटे में जमा हो रही है और वहां बाढ़ की विकराल समस्या उत्पन्न हो गई है। हालांकि इससे एक लाभ भी हुआ है। वह यह कि कुछ

गाद समुद्र तट तक पहुंच रही है और इस तरह बांग्लादेश की भूमि का विस्तार हो रहा है। दूसरी तरफ हुगली में गाद कम जाने के कारण यह समुद्र तक कम पहुंच रही है। समुद्र में गाद के लिए स्वाभाविक भूख होती है, जैसे हमारी रोटी खाने की भूख होती है। समुद्र की भूख को हुगली द्वारा पूरा न किए जाने के कारण समुद्र ने हमारे तटों को खाना शुरू कर दिया है। इसलिए फरक्का बराज बनने के बाद गंगासागर द्वीप का भारी कटान हो रहा है। इस कटान में कुछ योगदान समुद्र के स्तर के बढ़ने का भी है, लेकिन गाद कम पहुंचने का प्रभाव तो है ही।

दूसरी समस्या है कि हमने टिहरी बांध बनाकर भागीरथी नदी द्वारा लाई जा रही गाद को पहाड़ में रोक लिया है। अलकनंदा द्वारा लाई जा रही गाद को भी हरिद्वार और नरोरा बराज से निकाल लिया है। फलस्वरूप नरोरा के नीचे गंगा में पानी और गाद दोनों कम है। पानी कम होने के कारण गंगा का वेग कम है। वेग कम होने का नतीजा यह हो रहा है कि यद्यपि गाद की मात्रा कम है, फिर भी वह गाद नदी के पेटे में ज्यादा जमा हो रही है। गंगा का स्वभाव है कि वह प्रतिवर्ष अपने पेटे में कुछ गाद जमा करती रहती है और 5 या 10 वर्षों के बाद जब बड़ी बाढ़ आती है तो इस गाद को ढकेलकर समुद्र तक पहुंचा देती है। लेकिन बड़ी बाढ़ अब न आने के कारण जो भी गाद नदी के पेटे में जमा हो रही है वह समुद्र को ढकेली नहीं जा रही है। परिणामस्वरूप गंगा का पेटा ऊंचा हो रहा है। पानी अगल–बगल फैल रहा है जिसके कारण बिहार में बाढ़ अधिक आ रही है। कोसी और गंडक जैसी गंगा की सहायक नदियों के पानी को समुद्र तक पहुंचाने की क्षमता का ह्रास हो गया है। इसलिए इन नदियों में भी बाढ़ आ रही है।

तीसरी समस्या है कि हमने बांग्लादेश के साथ समझौता कर रखा है कि गंगा द्वारा लाए गए पानी में से 50 प्रतिशत बांग्लादेश को और 50 प्रतिशत हुगली को हर समय दिया जाएगा। हर समय 50 प्रतिशत पानी बांग्लादेश को दे देने से हुगली में बड़ी बाढ़ अब नहीं आ रही है। इस कारण जहाजरानी प्रभावित हो रही है। कारण यह कि गंगा के मुहाने पर ज्वार तेजी से आता है और अपने साथ भारी मात्रा में बालू लाता है। लेकिन भाटा धीमा होने के कारण उतनी मात्रा में बालू वापस नहीं जाती।

सूडोकु नवताल- 5444

सरल

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5443 का हल

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

चालीस लाख घरेलू सहायक–सहायिकाए

मोहन। कुछ महिलाएं कह रही हैं कि इस महामारी ने घरेलू काम करना सिखा दिया है। अपना काम खुद करने की आदत पड़ गई है। जो औरतें वर्क फ्रॉम होम कर रही हैं, उनमें से बहुत सी अब अपने काम खुद करना चाहती हैं। वे पैसे को अब यूं ही उड़ा देना नहीं चाहतीं। दूसरी तरफ घरेलू सहायिकाओं का कहना है कि जहां वे काम करती थीं, उनमें से बहुत कम लोग अब उन्हें बुलाना चाहते हैं। वे फोन करके उनसे आने के बारे में पूछती हैं, तो वे मना कर देते हैं। मई में समाचार आया था कि दूसरे लॉकडाउन के बाद भारत के मध्यवर्ग में बड़ी बहस छिड़ी कि घरेलू कामवालियों को घर के अंदर आने दें, या न आने दें। एक समय में कामकाजी औरतों के बीच मजाक चलता था कि अगर पति और मेड में से किसी एक को चुनना हो, तो वे मेड को चुनेंगीं। आधिकारिक अनुमान के अनुसार भारत में करीब चालीस लाख घरेलू सहायक–सहायिकाएं हैं, जबकि वैसे इनकी संख्या पांच करोड़ के आसपास बताई जाती है।